दोहा ॥

वन्दौं श्री गिरिजा सुवन विघ्न निवारन जो हि
सुविख्यात दाता बडे शुभमति के प्रभु सो हि ॥
सब विध मंगल मूल है श्री गणपति यह नाम ।
एक बार हू उच्चरे जन के पूरें काम ॥ २ ॥
हरि के सनमुख होय नर रहे न दुख को लेश ।
सुख पावे जो प्रेम से मुख तैं कहे गणेश ॥ ३ ॥
पागूं हरि के प्रेम में वर मांगूं गण नाथ ।
लागूं श्री मथुरेश के चरण नवाऊं माथ

श्री गुरु महिमा का पद ॥ राग सारंग का दादरा
श्री गुरु नित दीनन हितकारी ॥ अमित प्रभाव विदित गुरु महिमा ॥ पतित उधारण भव भय हारी ॥ श्री० ॥ बाल्मीक ध्रु आदि घनेरे ॥ गुरु हि कृपा तैं भये सुखारी ॥ श्री० ॥ गुरु तैं ज्ञान ज्ञान तैं प्रीती ॥ उपजैं तब हि मिलै गिरधारी ॥ श्री० —
हरि गुरु में कछु अन्तर नाहीं । वेदन ये ही गिरा

उचारी ॥ श्री० - मंगल मय श्री गुरु पद अम्बुज मधुरा मन मधुकर बलिहारी ॥ श्री० -

---

प्रथमदृश्य ॥१॥

(अजामिल नामी कान्यकुब्ज ब्राह्मण की स्त्री निर्मला का अपने पति के वियोग में आतुर होजाना और उसको सखियों का उस को समझाना) ॥

कलावती० अरी बहन निर्मला तो को कहा भयो है तेरो मुख शोक और चिन्ता से निपट - मुरझाय रह्यो है न तो बहिना आज तैं कछू हमारो आउ आदर कियो न हमारी बात को उत्तर दियो सांची कह बीर तेरे हिये में कहा पीर है

निर्मला - चुप की बैठी है कछु उत्तर नाहीं देती

शीलावती अरी सखी निर्मले आज तो तू चित्र लिखी सी दीसै है बहिना तेरी यह दिशा हम से देखी नहीं जावे है हमारो जिया घबरावै है ले हम अपने घर को जात हैं तेरे बोलबे में करामात है सो तू अपने पास धरी राख ॥

(यह कहि कर दोनों सखियां उठ कर चलने लगी तब निर्मला गहरा सांस भर के बोलती है

निर्मला- हे कलावती लीलावती सखियो सुनो रिस होय के मत जाओ जरा मेरी ओर ध्यान लगाओ गम खाओ धीरज बंधाओ मेरी या समैया में जो दिशा होय रही है वा को कछू उपाय नहीं है यह कहि कर गीत गाती है

राग आसावरी वा सोरठ ॥

वेग दरस देहु प्यारे प्राणपति ॥ वेग ० ~ बिन दर्श न पल पल युग के तुल विकल हैं प्राण हमारे ॥ प्राणपति ० -॥ बीती अवध बगद आवन की नैन लटक रहे द्वारे । कौन चूक दासी की देखी रहे निठुरता धारे ॥ प्राण ० ॥ बिन पावस दोउ नैन झरत हैं चलत सदैव पनारे । जिम चातक इक बूंद हि तरसैं तिम मम प्राण विचारे ॥ प्राण ० - गोपिन तज मथुरेश हरी जिन मथुरा नगर सिधारे । सो ही दशा बीत रही मो पै यह संकट को टारे ॥ प्राण ० --

वार्ता

अरी सखियो प्राणनाथ के दरशन बिना यह जीव अत्यन्त दुखी है यह कहि कर मूर्छित होती है

लीलावती (निर्मला को चेत करा के) अरी प्यारी बहिन ऐसे घबराहट की कहा बात है धीरज धर

आतुरताई न कर ॥ मोसे कह तेरे स्वामी कहां गये हैं कब से विदेश गामी भये हैं चिट्ठी पत्री आई क छु खैर खबर पाई के नाहीं सो वेगी कह दे ॥

निर्मला॰ बहिना सुन तू जाने ही है कि मेरे प्राण पति चारों वेद और सब शास्त्र के वडे भारी पण्डित हैं उन की विद्या अखण्डित है शरीर कहा है सारे सद्गुणन की खान दया मया अपार धर्म कर्म सदाचार से मण्डित है जब से मैं ब्याही आई उन की चरण सिवकाई पाय अपने को धन्य मानूं हूं और ऐसे स्वामी को मिलनो वडे भारी तप और पुन्य को फल जानूं हूं या दासी पर उन की अत्यन्त कृपा रही आवे है पर नारी की चरचा उन को सपने हू में नहीं भावे है मेरे बूढे सास ससुर अपने सपूत पूत की सेवा से सदा प्रसन्न रह कर असीस देवें हैं सन्तान पायबे को यथार्थ सुख लेवें हैं आज चार महिना को समैया वितीत भयो उज्जैन नगरी के राजा ने यज्ञ करायवे को मेरे स्वामी बुलाये हैं यज्ञ में उन को आचार्य बनाये हैं ॥ दो महीना में यज्ञ समाप्त कर के घर आयबे की कह गये हते पर चार मास बीते उलटे नहीं आये न जाने कित को सिधाये मनुष्य भेज कर समाचार मंगाये तो यह खबर लाये कि राजा ने वडी भारी संपदा देकर विदा किये वहां से विदा भये दो मास बीत गये न जाने कित को सिधारगये हाय प्राणनाथ (ऐसे कहि कर फिर मूर्छित होती है)

कुलावती स्त्री सावनी का मिलकर गाना

पद ॥

जग है दुख को मूल ॥ ये सगरो जग०—

या में सुख मानें नरनारी उन की भारी भूल ॥ ये०—
कोउ निर्धन कोउ रोग मलिन तन काहू के कछु
शूल । इष्ट वियोग दुखित जन कोउ डारत नि
ज सिर धूल ॥ ये सग०—॥ १ ॥ इक दिन राम रा
ज्य पद आशा अवध प्रजा रही फूल । दूजे
दिन बन गमन राम को ठाठ भयो प्रति कूल ॥
ये सग०—॥ २ ॥ ओस की बूंद परै जिम सरसै
बन में पत्र अरु फूल ।
तिम विषयन रस तें मन हरषै छिन में होत
निर्मूल ॥ ये सग०—॥ ३ ॥
मोह फंद तें निकस मंद मति बन्दे ये हरि सु
ख मूल । श्री मथुरेश प्रेम रस प्याला पी पी
मद में फूल ॥ ये सगरो०॥ ४ ॥

बार्त्ता

दोनों सखियां (निर्मला से) अरी बीर नि-
र्मल तू काहे को ऐसी विकल होय है जगत तौ
दुख को ही मूल है या में सुख मानवो भूल है—
कोउ निर्धन पने से दुखी है कोई रोग से काहू

के कछु और ही बात को सन्ताप है कोउ इष्ट मित्र बंधू इत्यादि के वियोग से करनो विलाप है एक दिन अवधपुरी में श्री रामचन्द्र के राज्याभिषेक को परम आनंद छायो है दूजे दिन उन के बनोबास के दुख से प्रजा ने भारी शोक मनायो है ॥ इन्द्रियन तें जो विषयन में सुख प्रतीत होवे सो थिर नहीं है जैसे ओस की बूंद न ते वृक्ष में पान फूल थोडी देर सरसाय के मुरझाय जावें हैं वैसे ही विषय सुख बहुत न्यून समें में नसावें और अन्त में दुख ही दरसावें हैं या तें या झूठे जगत के मोहजाल से निकसबो ही परम पुरुषार्थ है आनंद कंद श्री हरि को भजनो ही परमार्थ है श्री मथुरेश के प्रेम रस को प्यालो पी कर आनन्द मनाइये शोक मोह के मल को दूर बहाइये ॥ चलो अब वृद्ध माता पिता के दर्शन पाइये ॥

(दोनों सखियां निर्मला को साथ
लेकर अजामिल के माता पिता
के पास उसी स्थान के दूसरे भाग
में जाती हैं उन वृद्ध महात्माओं
वाक्य कर के धीरज पाती हैं ॥)

(अजामिल की माता सुशीला और पिता धर्म [illegible] पुत्र के स्मरण में आंसू-

बहा रहे हैं और यह पद गा रहे हैं ॥)

पद

हाय दैव निठुराई तोरी मुरलसे कही न जाती है ॥ सुख नहिं देख सके काहू को चंचल दु बैल धाती है ॥ सदा चकोर चंद्र को हेरै चातक घन को टेरै है ॥ काहू को दुख नाहिं निवेरै कठिन तिहारी छाती है ॥ माया का तेरी भेद न पाया सारा जग भरमाया है ॥ जो आया सो चक्र में आया सब हि हंसाय रुलाती है ॥ चक्कर खावें चांद सुरज हू माया वश भरमावें हैं ॥ वानर वत सुर नरहि नचावें अद्भुत खेल खिलाती है ॥ श्री मथुरेश चरण जो ध्यावें राग द्वेष नाहिं चित लावें ॥ सो माया के वस नहिं आवे श्रुती सार बतलाती है ॥

तीनों साष्टांग दण्डवत करके बैठती हैं

(सुश्री ला॰ बेटी निर्मला कहो मेरे प्यारे नैनों के तारे अजामिल की कछु सुध पाई कोई पत्रि का आई कि नाहीं ॥

निर्मला (लूपकी है) सखियां हाथ जोड

उत्तर देती हैं) हे माता अज हूं कछू समाचार मिले नहीं आप की बहू अत्यन्त व्याकुल रही-याते हम दोनों याकूं आप के निकट लाई हैं या को भारी चिन्ता छाई है ॥

सुशीला० (तीनों से) देखो पुत्रियो चिन्ता चिता के समान देह को जरावै है पर हाथ कछु भी नहीं आवै है दैव की लीला को मनुष्य कहा जाने उचित है कि प्राणी जा स्थिति में होय बुरो न माने मेरो सुपुत्र अजामिल बड़ा धर्मात्मा। और हम दोनों बूढ़े जीवन को परम भक्त सेवा में अनुरक्त अत्यन्त सुशील साधु सेवी है वाके। कबहू बिगाड़ नहीं होनो है सदा कल्याण ही होयगो वा की ओर से चिन्ता क्यों करिये॥ उचित है कि धीरज धरिये और भगवन्त को सुमरिये॥ वो अवश्य हमसे मिलेगो॥

धर्मदत्त० हां हां प्यारी बेटी तुम सोच न करो धीरज धरो हमारे आशीर्वाद से प्यारे अजामिल को कभी दुख संकट नहीं होनो है वाकी चिन्ता में वृथा समय खोनो है॥ ऐसे माता पिता के सांचे-सेवक को अकल्याण कैसे होय सकै है वा को कभी काल भी बांको नहीं होसकै है निश्चय पूर्वक हमारी यह असीस वीसों विसै फलनी है

(तीनों का वापस जाना पर देका आना)

।ॐ।

ॐ

॥ प्रथमदृश्य ॥

अजामिल का एक विद्यार्थी रसिकलाल नामी चौबे गाना हुआ परदे से बाहर आता है ॥

पद ॥

मदन की महिमा अपरंपार ॥ गुण मंडित ज्ञानी पंडित हू मानी या सैं हार ॥ मदन०
ब्रह्मा मोहे निजपुत्री को सुंदर रूप निहार ॥ राजसुता पर नारद रीझे जत मत दियो बिगार ॥ मद०
शंकर निरख मोहनी छवि कौ सुध बुध दई बिसार ॥ विश्वामित्र मैनिका संगत कर तप दियो निवार ॥ मद०- भये अजामिल पंडित घायल लोक लाज दई टार ॥ बिन मधुरेश कृपा नहिं प्राणी होय सके भव पार ॥ मदन०

वार्ता

रसिकलाल भैया ओ जय श्री कृष्ण जय श्री कृष्ण ॥ (खूब ज़ोर से हंसकर) देखो भैया ओ कामदेव कैसो बलवान है याने जीतो सगरो जहान है याकी महिमा अपार है बड़े बड़े

पंडितन ने या से मानी हार है ब्रह्मा जी अपनी कन्यां सरस्वती की सुंदरताई पर रीझ गये नारद से ज्ञानी ह्वै एक राज कुमारी पर मोहित भये मोहनी अवतार पर शंकर की कैसी दशा भई विश्वामित्र की तपस्या मैनका अपसरा के संग से छीन ह्वै गई ॥ हाय मेरे गुरू अजामिल महाराज कैसे ज्ञानी पंडित रहे एक वेश्या के तीरवे कटाक्ष से घायल भये ॥

अब खान पान निद्रा त्याग वाही के सोच में विराजे हैं ॥ संध्या बंदन आदि सारे कर्म त्याजे हैं मैं वा रांड के खोज में आयो हूं ॥ गुरूजी ने हेरवे को पठायो हूं (यह कहि कर रास्ता रोक बैठता है)

एक ओर से वो वेश्यां अपने एक यार से गलबाही किये मुस्कराती चारों तरफ नैन बान चलाती मनुष्यों को जाल में फंसाती छल वाली भाव बताती आती हुई दिखाई दी उसे देखकर रसिक॰ आहा वो आई मनो कामना पाई (इतना कहि कर आगे बढता है)

(रसिक लाल और वेश्यां की बातचीत)

रसिक॰ अजी हो अजी हो जय श्रीकृष्ण

वेश्या॰ अबे तू कौन बेतमीज़ है क्या तुझ को अपनी जान नहीं अज़ीज़ है कैसे बो-

लता है फारवाने जैसा मुंह खोलता है जबा न संभाल जरा देख भाल कर कलाम निकाल ॥ क्यों रास्ता रोके खडा है किस काम के लिये अडा है हट हट मूंफट आगे जाने दे ॥

रसिक०(हाथ जोड़ कर) अजी महाराज नाराज क्यों भई जाती हो इतना गुस्सा क्यों खाती हो आप के क्रोध के योग्य यह तुच्छ जीव नहीं है या ने कधी भी कोई बात नहीं सही है दया करके फरमाइये आप को कहा नाम है और कौन ठिकानो है सो बतलाइये

वेश्या०- अबे तुझ को हमारे नाम गाम से क्या काम है हमारा नाम दिलबर नेक अंजाम है ॥ इसी नगरी में गुजर हमारा सुबह शाम है ॥

रसिक० और हुजूर आप को मकान ॥

वेश्या० देखो फिर दिक करता है मकान मकान पूछ तुझे क्या करना है

रसिक० अजी सरकार मेरे गुरू जी एक बडे मालदार आसामी हैं बडे भारी पंडित सरनामी हैं उज्जैन के महाराज से यज्ञ करा के खूब माल तात लाये हैं वे आप की मोहिनी छब पर लुभाये हैं आप के इश्क में बे चैन हैं आप ही के ध्यान में दिन रैन हैं -

आप के कटाक्ष ने उनको मन घायल कर दिया है आप के दरस की तरस में व्याकुल हो रहा है या कारण से यह दास आप को निवास जा न्यो चाहे है ॥

वेश्या० (मन में खूब प्रसन्न होकर अपने यार से कहने लगी) अजी प्यारे सरकार आज इस अजब वेवकूफ़ से काम पड़ गया है आप मकान पर तशरीफ़ ले चलें में इस नालायक़ से पीछा छुड़ा कर जल्द आती हूं इस को बातों ही बातों में कैसा उड़ाती हूं सो आप से आकर कहूंगी अम्मा जान पान खाये बगैर बैठी है देर होने से नाराज़ होंगी इस लिये दूकान से पान लेकर आप जल्द तशरीफ़ ले जाइये मैं जल्द हाज़िर होती हूं ॥

(जार पुरुष वहां से जाता है ॥)

वेश्या० -(चौबे से) अजी पंडित जी मुझ से बड़ी नादानी हुई जो आप से इस तरह पेश आई आप तो पंडितों के शागिर्द हैं खुद भी पंडित हैं माफ़ कीजिये और मेहरबानी करके कह दीजिये आप के गुरू कहां ठेरे हैं मुझे उन्हों ने कब देखा था यह जो अब आप हैं क्या क्या चीज़ साथ ला

ये मैं कहां के रहने वाले हैं ॥

रसिक० हुजूर वे कन्नौज के रहवे हारे अपने माता पिता के प्यारे जगत के छल-छंद से न्यारे सारे देस विदेसन मैं प्रसिद्ध वेद के जानन हारे है ॥ उज्जैन के राजा-ने यज्ञ कराय बे को बुलाये हे वहां से बहु माल ताल पाय विदा होय घर को जात रहे मार्ग मैं तुम्हारे या नगर में टिके हैं ॥ धर्म शाला मैं निवास कियो है एक दिना-आप को वा मार्ग से निकसते देख लियो वा समैया से आप के मिलवे की चाह में बे चैन हैं आप ही को सुमिरन दिन रैन है आज मो कों खोज में पठायो धन्य मैं-जो आप को दर्शन पायो ॥ अब आप अपनो स्थान मों कूं दिखाय दीजिये कृपा कर के कृतार्थ कीजिये ॥ मैं उन को आप के घर लाऊं गो तब ही सुख पाऊं गो

वेश्या० (अपने साथ रसिक लाल को ले कर स्थान पर आती है)

वेश्या के स्थान में साजिन्दे बैठे हुए बाट देख रहे हैं उस की माता भी इन्तजार कर रही है

नायका० (खफ़ा हो कर) अरी छिनाल

इन दिनों में बडी इतरा गई है तुझे आपे की भी सुध नहीं रही है देख कितनी देर होगई उस्ताद जी बैठे हैं तालीम का वक्त निकला जाता है कहां रह गई थी ॥

बेपुथा० अम्माजान ख़फा क्यों होती हो आज एक बडे भारी पंडितजी महाराज के शिष्य यह पंडितजी (रसिकलाल की तरफ़ इशारा करके) मिलगये इन से बात चीत में देर होगई

नायका० आहा पंडितजी आइये तशरीफ़ लाइये बडी महरबानी फ़रमाई आप के पधारने से मेरी झोंपडी ने बडी इज़्ज़त पाई तशरीफ़ रखिये और गाना सुनिये

(रसिक बैठता है और दिलबर गाती है)

गजल ॥ पीलू बरवे में

प्यार और प्रीत बिना दुनिया में कुछ सार नहीं
मिस्ले मुर्दा है वो जिस के कोई दिलदार नहीं
क्या मज़ा उसने लिया पा के ये नर तन जिसके
इश्क का तीर कलेजे के हुवा पार नहीं
इश्तियारी है जो सच पूछो तो भारी नेमत
वस्ल भी इस के बराबर तो मज़ेदार नहीं
देखो बुलबुल को वो दिल से हुई गुल पर आशिक
शमा पर जलने में परवाने को कुछ आर नहीं

खाली खटके से नहीं कोई भी दिल दुनिया में
ऐसा गुल कोई नहीं जिसके लगा खार नहीं॥
हिज्र में यार के देखा जो तड़पने में मज़ा ।।
ऐश का उसके मुकाबिल में तलबगार नहीं॥
बस में आता है मुहब्बत से वो दिलवर मथुरेश
खेश्यो दरवेश कोई ऐसा वफ़ादार नहीं ॥

(इस गजल का हर एक शेर सुन कर रसिक-लाल वाह २ कहता जाता है ॥ पीछे जब गाना हो चुका तो कहा कि एक बार इसको जबान से वैसे ही सुना दो तब दिलबरने उसको धीरे धीरे पढ़ कर सुनाया)

रसिक० वाह वाह सरकार आज आपने ग़ज़ल क्या गाई बड़ी भारी नसीहत सुनाई ॥ सच है इश्क़ ऐसी ही चीज़ है इससे मनुष्य भगवान को पहुंच जाय है॥ चित्त वृत्ति एक तरफ़ लग जाय है परन्त प्रेम संसारी तुच्छ जीवन में करनो ठीक नहीं भगवत चरणारविंद में होनो चाहिये जहां तक बने उसी में जी लगाइये ॥

नायका० हां पंडितजी यह तो आपने सच फ़रमाया मेरे भी निहायत मन भाया ॥ लेकिन ईश्वर में पहिले ही से दिल लगना बहुत

मुशकिल है ऐसा तो कोई विरला ही दिल है जिस में भरा इश्क़ के कामिल है ॥ शुरू में किसी भी चीज़ में प्रेम हो जावे तो दिल को ठेरने की आदत हो जावे पीछे मजाज़ी से हक़ीक़ी में झट पहुंच जाता है मुक्ति का सुरूर याने आनन्द पाता है ॥ जिस को-आदत ही नहीं उस की कुछ भी गत नहीं

(दिलबर की तरफ़ झांक कर)

अरी दिलबर तू पंडित जी को कोई चीज भगवान के प्रेम की क्यों नहीं सुनाती क्या-तुझे वैसी कोई चीज़ नहीं आती ॥

दिलबर सुनिये पंडित जी-फिर गाना शुरू करती है (ऐसी कहा मो से चूक भई) इस के वज़न पर ॥

॥ पद ॥

नैनन बान से घी घी परी मो पै घात किये तन जान हरी । तिहूं लोक से न्यारी बिहारी की छब प्यारि प्यारि हिये बिच धारी मैं अब ॥ तन वारी पै वारी है संपत सब वो ही माधुरी मूरत चित्त धरी ॥ १ ॥
लाय दई कै सो टौना कियो नंद छौना मेरो सुख लूट लियो ॥ मोय उत्तर ही कछु नाहि दियो पछतांय ही हूं मैं हार खरी ॥ २ ॥

मथुरेश पिया दृग मांहि बसे जग के सग रे झगरे हैं नसे ॥ वाके प्रेम के फंद मैं आय फंसे सुध देह की गेह की है बिसरी ॥३
रसिक ० वाह वा वाह कैसो सांचो प्रेम को प्रवाह निश्चय करके येही हरि प्राप्ति की राह है गोपिका जन ऐसे ही प्रेम के प्रभाव से प्रेम ध्वजा कहाई जिन की महिमा बडे २ महात्मा ओंने गाई है मैं आज अपने को धन्य मानूं हूं जो ऐसे हरि जनों की संगत पाई ॥ अब आज्ञा होय मैं गुरू जी के निकट जाय उन को यह सगरो वृत्तान्त सुनाय कर बुलाय लाऊं गो
दिल ० (एक चांदी की रकाबी में पान इलायची लेकर सामने आकर) लीजिये महाराज पान खाईये
रसिक (हंसकर) आहा सरकार आप की कृपा मो तुच्छ जीव पर अपार है या उपकार को धन्यबाद देऊं हूं और माफ़ी चाहूं हूं ॥
दिल ० क्यूं क्यूं पंडितजी यह क्या बात है हमारे हाथ का पान खाने में आप के कैसे ख्याल लगते हैं
रसिक नहीं महाराज कछू विचार

नाहिं है पर मेरी आदत पान खायबे की-नहीं है आज ताईं ऐसी ही प्रतिज्ञा रही है

दिलबर॰ वाह साहिब यह प्रतिज्ञा तो अब नहीं निभैगी आप के इन्कार में जरूर कुछ मसलहत हैगी पर खयाल कीजिये मैं हरएक को अपने हाथ से कब पान देती हूं बडे २ पंडित ज्ञानी लोगों से सौ दफे कहला लेती हूं तब एक बार बीडी देती हूं ॥ ॥

रसिक॰ कहा आप के घर को पान पंडित लोग खात हैं ॥

दिल॰ वाह ये ही तो अचम्बे की बात है आप समझे नहीं हमारी क्या ज़ात है हम में क्या करामात है ॥ सुनिये हमारी बोल चाल उरदू की देख कर किसी को हमारे हिन्दू न होने का संदेह होजाता है असल में हम धाऊ बडारी कौम के हैं और हमारे यहां ब्राह्मण ही जल लाता है वो ही रसोई बनाता है दूसरी कौम के हाथ का तो पानी तक नहीं पीने में आता है ॥

रसिक॰ तौ आपको नाम दिलदर नेक-अंजाम कैसे भयो और आप के साथ में

एक यवन कैसे रह्यो ॥

दिलवर॰ अजी वाह खूब धोखे में आये क्या बात ज़बान पर लाये मेरी अम्मा जी इस शहर में रहती थी पडोस में एक मौलवी साहिब की चाखर थी जब मैं पैदा हुई तो मौलवी जी ने मेरा नाम यह रख दिया और मुझे फारसी भी उन्हों ने पढाई इस सबब से बोल चाल उर्दू की महावरे में आई हम तो असल हिन्दू भक्तन कहाते हैं उत्तम मनुष्यों को भक्ति मार्ग में भजन सुना सुना कर लाते हैं और मेरे साथ में जो शख्स था वो मौलवी साहिब का शागिर्द था साथ पढने से जान पहिचान हो गई ॥ कोई और बात नहीं है

रसिक अच्छो तो अच्छो अब मेरो संदेह मिट गयो आपके स्वरूप को ज्ञान भयो ॥ लाइये पान खिलाइये ॥

रसिक॰ यह कहिकर पान खाता है और अपने गुरू के पास को जाता है

पीछे से नायका और लौंची की बात चीत ॥

नायका अरी दिलबर आज तो ख़ू

धिक्कार तू लाई वाह रे तेरी चतुराई यह तो बिलकुल बगलोल सा था तेरी बातों में आ गया इस का गुरू देखें कैसा निकले ॥

दिलबर अजी अम्मा जान आप ने खूब कही कोरी संस्कृत पढ़े हुए वेद पाठी जितने देखे ऐसे ही सीधे सादे देखे बल्कि जितना ज्यादा पंडित होता है उतना ही ज्यादा बगलोल और जल्दी फंदे में फंस जाता है कल देखिये उस को कैसा गुलाम बनाती हूं॥ आप को कैसा तमाशा दिखाती हूं ॥

नायका शाबाश बेटी शाबाश (पीठ ठोक कर) बेटी तुझ से ऐसा ही भरोसा है पर मुझे इस मुए प्यारे खां का खटका है जो आज कल तेरे साथ इश्क जतला रहा है अभी पान लेकर घर गया है और कह गया है कि जल्द आता हूं॥

दिलबर ॥ अजी अम्मा जान इस को मैंने यह तदबीर सोची है कि जो कुछ दस पांच हजार का धन कमा कर यह लाया था सो तो अपने हाथ आ ही गया अब इस को दिहली अपनी बहिन के पास भेजती हूं वो इसे कुछ खिला कर

इस का काम तमाम करदेगी ॥

प्यारे खां का आना और दिलबर
का उस को फ़रेब देकर
उल्लू बनाना ॥

दिलबर आहा प्यारे सरकार इतनी देर कहां लगाई क्यों मुझे तरसाई एक एक मिनट भारी संकट से गुज़रा तुम से प्रीत क्या करी जान को आफ़त कमाई क्या करूं चैन ही नहीं आता आप के दीदार बिना कुछ भी नहीं सुहाता खाना पीना तक नहीं भाता

प्यारे खां। ओहो प्यारी दिलबर जान सच कहती हो मेरा भी दिल तुम से ज्यादा परेशान हो जाता है बेदेखे हरगिज़ चैन नहीं आता मैं तो जानो दिल से तुम पर कुरबान हूं तुम्हारा सच्चा आशिक़ बेगुमान हूं ॥

दिलबर शौक़ में ग़जल गाती है यार-
को रिझाती है ॥

ग़ज़ल

हाय इस इश्क़ ने दीवाना बनाया मुझको
किस मुसीबत में गिरिफ़तार कराया मुझको ॥
प्यारे के देखे बिना पल भी नहीं कल दिल को
प्रीत के जाल में प्रीतम ने फंसाया मुझको ॥

यार है पास मगर प्यास हैं हरदम बढती । ।
इश्क़ ने कैसा है यह रोग लगाया मुझको ॥
वस्ल में भी है लगा ख़ौफ़ बिछड जाने का ।
चैन हरगिज न किसी हाल में आया मुझको
यार से होवे न इक दम भी जुदाई मधुरेश ।
इस तमन्ना ने है हर आन रुलाया मुझको ॥

बहुत सोच में होकर मुंह बना
कर रोकर कहती है ॥

दिलबर॰ अरे ग़ज़ब रे ग़ज़ब क्या बात-याद आगई कम्बख़्त (यह कहि कर बे होश होती है)

प्यारे॰ (घबरा कर) है है यह क्या माजरा है (ऐसा कहि कर दिलबर को चेत-कराता है) प्यारी कहो तो सही क्या बात है घबराहट काहे का है तुम्हें मेरी जान की कसम सच कहदो ॥

दिलबर ॰ अफ़सोस २ (यह कहि कर फिर बेहोश होती है) (फिर चेत कराने पर) प्यारे क्या करूं आठ रोज हुए मेरी बहिन का ख़त देहली से आया रक्खा था. नायका जी ने मुझे आज पढाया मैं ने पढकर चाक कर के पानी में बहाया ॥

प्यारे॰ आखिर उसमें क्या लिखा था ॥
दिलबर॰ हाय प्यारे क्या कहूं उस पर कोई बडी भारी मुसीबत पडी है कोई सख्त आफत की घडी है वो आपको मदद के वास्ते बुलाती है हाय मैं क्या करूंगी ॥ (यह कहि कर फिर बेहोश हुई)

प्यारे॰ वाह जी वाह बडा सोच किया — यह कौनसी भारी बात है फिक्र करना वाहियात है मैं कल ही रवाने होता हूं आपकी बहिन का दुख खोता हूं उन पर मुसीबत है उसको अपने ऊपर समझना चाहिये हरगिज़ मन में अरमान न लाईये लो अब तो खाना खाकर सो रहैं सुबे ही मैं देहली जरूर जाऊंगा आपकी बहिन का दुख जैसे हो सकेगा तन से मन से धन से मिटाऊंगा ॥

दोनों आराम करने गये

तीसरा दृश्य

रसिकलाल का अपने गुरू अजामिल के पास आना वेश्या का हाल सुनाना पीछे - वेश्या के घर उसे पहुंचाना ॥

रसिकलाल महाराज पांय लागू हूं ॥

अजा॰ (कुछ उत्तर नहीं देता वेश्या के ध्यान में बैठा गहरे सांस लेता है ॥)

रसिक॰ अजी महाराज गुरूजी पांय ला। गू हूं (बहुत जोरसे बोलता है)

अजा॰ (चेत करके) अरे रसिका तू कहां है ॥

रसिक अजी महाराज मिठाई खवा ओ तब कहूंगा

अजा॰ (खुश होकर) अरे मिठाई तो चाहै जिती खाय लीजे कछुक वृतान्त तो कहदे

जल्दी कह चुप न रह

रसिक॰ कहा कहूं महाराज पूरो खोज ले आयो पर धोको ये खायो कि वाके हाथ को बी डा खाय आयो अब कछु प्रायश्चित्त बताओ

अजा॰ अरे तू मूड को मूढ ही बन्यो रह्यो

पान खायबे मैं कहा दोष भयो ॥

रसिक० महाराज वो हिन्दू सी तौ दीसै ना हि थी पर वाकी बातन मैं आयके धर्म ग माय आयो पीछे बहुत ही पछतायो

अजा० वाह रे गंवार तैं जान्यो नहीं शास्त्र को कछु भी सार ले मन बुद्धि को संभार तज दे अज्ञान को विचार ॥

गाना अजामिल का पद ॥

आत्मा है एक येही उत्तम विवेक जानो मूरख अनेक भांत मते उपजावैं हैं ॥ माटी जल पवन अनल को जो पूतरो है चैतन बिना सो काहू काम नहिं आवे है ॥ मन जड बुद्धि जड इन्द्री और प्राण जड आतम प्रकास ही तैं कारज करावै है ॥ जात पांत भेद कैसो कौन वस्तु मांहि रहै मूरख विचार हीन वृथा दुख पावै है ॥

वार्ता

अजामिल० देखौ सब मैं एक ही आत्मा व्याप रही है मूरख लोग भेद बतावैं हैं सो ही पछतावैं हैं माटी पानी पौन अगिन को यह पूतरो जीव के निकस जायबे पर कछु काम को नाही रहै है और मन बुद्धि

इन्द्री प्राण इन सम मन कौ हू वेद जड ही क हैं हैं तो वना औ जात पांत को वखेडो कहां से आयो और जड देह में कहां से समायो जीवात्मा जब सब को एक है तो जात-पांत को झगडो मान बो अविवेक हैं ॥

औरसुनौ ॥ पद ॥

ब्रह्म और जीव मांहि भेद नाहि काहू भांत ज्ञान वान ये ही मत सत्त कर माने हैं । वा में रूप रंग नांहि भेद को प्रसंग नाहि अगम असंग ताहि निगम वखानै हैं ॥
या के उपरान्त सारो जगत नितांत झूठो जेवरी मैं सर्प जैसे भ्रम कर जाने हैं ॥
जात को वखेडो सांचो कौन भांत मान्यो जाय भ्रान्त भये मूरख अप्रान्त भरमाने हैं ॥

वार्ता

देखो ज्ञानी लोग जीवात्मा को ब्रह्म ही मानै हैं और ब्रह्म रूप रंग संग दोष रहित है ऐसो वेद वखाने है ॥ ब्रह्म से भिन्न जो कछु पदारथ जगत मैं भासै हैं सब मिथ्या केवल माया के तमासे हैं जैसे जेवरी मैं सांप को भ्रम होय के -

डर लागे है वैसे ही ब्रह्म के नहीं जानबे से-
झूठो जगत नरक आदिकन को भय जनावै
है ॥ अब विचार करो कि जब सारो जगत ही
झूठो भ्रम जाल है तो जात पांत को झगरो-
सांचो मानिबो मूरख पने को ख्याल है ॥
रसिक • आहा गुरूजी महाराज आज तो-
आप अनूठो उपदेश दियो मो को निहाल
कियो परंत मन में जो संदेह है सो और सु
न लीजिये समाधान कीजिये

दोहा ॥ इन्द्रसभाकीलयमें

जाति भेद जो वेद के मत के है विपरीत
चार बरण श्रुति ने किये वर्णन सो किसरीत
मिथ्या है यदि जगत को सारो ही व्यौहार ।
सत्य कौन विध मानिये गुरु अरु वेद विचार
कहबो सुनिबो झूट है झूठो गुरु उपदेश ।
तो ब्रह्म हु क्यौं मानिये वृथा धर्म को लेश ॥
चारवाक जो नास्तिक मत जग में विख्यात
वा ही के अनुकूल ही आप कही यह बात
मो मन में आवे नहीं तुम्हरो यह उपदेश
सत्य सनातन धर्म को या में कछू न लेश ॥

वार्ता

श्री महाराज यदि जात पांत को भेद वेद के
अभिमत नहीं है तो चार वरण ब्राह्मण क्ष-

क्षेप वैश्य शूद्र इन की व्यवस्था गर्दने नामे कही है और हे महाराज यदि जगत के सारे व्योहार सत्य नहीं तौ गुरु और वेद आचार की कहा लिथ रही ॥ वे भी मिथ्या भये तौ ब्रह्म को मानना और धर्म को पहिचानना यह सब वृथा रहे नास्तिक को मत सिद्ध भयो न ईश्वर रह्यो न धर्म कर्म रह्यो ॥ यातें यह आप को उपदेश चित्त में रम्यो नहीं ॥

अजामिल दोहा

सुन कुशिष्य या काल में हौं नहिं निज आधीन । वह मृग नैनी कामिनी मन मेरो हर लीन ॥ यातैं वाद विवाद तज करो वहो की वात । मो को चरचा दूसरी प्यारे नाहिं सुहात ॥

रसिकलाल-हाथ जोडकर यह पद गाता है

पद

करूं इक विनती हूं कर जोर ॥

सुनिये बानी हित सरसानी यद्यपि परम कठोर ॥करू० गणिका की संगत अति निन्दित नाम हानि अति घोर ॥ तन मन नासै बुद्धि विनासै धर्म हरै चित चोर ॥ १ ॥करू तब लग ही रीझै वह जब लौं रहै जोवन

धन जोर ॥ पीछे निठुर तुरत छिटकावे- जिम तृण डारत तोर ॥ २ ॥
जग मैं हास अपकीरत भारी हंसै लोग चहुं ओर ॥ धन बीते चोरी अरु अकरम करत फिरै हर ठौर ॥ ३ ॥
घर की नार दरस को तरसै चल्यो जात मुख मोर ॥ वाके श्राप तैं ताप हिये मैं है पापिन सिरमोर ॥ ४ ॥
विमुख होय मथुरेश चरण तैं दुख पावै सुख छोर ॥ यातैं अस विचार तजिये- प्रभु पुनि पुनि कहूं निहोर ॥ ५ ॥

वार्ता

हे गुरू जी महाराज मैं हाथ जोड़ कर विन्ती करूं हूं सो श्रवण कीजिये ॥
वेश्या की संगत महा निन्दित है यामैं हानी अखंडित है वेश्या संग से अंग भ्रष्ट और धन नष्ट होवे है धर्म रूपी रत्न को तुरत हर के वेश्या चित्त हू को चुराय लेवै है जब तांई जोवन और धन को जोर बन्यो रहै तब- तांई साथी गणिका जानिये मेरी प्रार्थना सांची मानिये ॥ जगत में वेश्या गामी की- भारी बदनामी होय है ऐसे कौ कोई भी

हामी नाहि होयहै ॥ धन जब बीत जाय जार की परतीत जाय निर्धन भयो जार पुरुष चोरी और ज्वारी पने से तथा अन्य कुकर्मन कौ करके धन लाय वेश्या कौ रिझावे है परंतु या लोक और परलोक सब ठौर अप्रतिष्ठा और परम दुख पावै है ॥ घर की स्त्री दुख पाय जब श्राप देवे है तो जार पुरुष सदा संताप में रहकर घोर विपत्ति को सेवे है ॥ हरि को दरस तथा सदगति कबहु नहीं पावै है सारी सुकृत नसावै है ॥

अजामिल- वेश्या सुनो ॥ ॥

॥ पद ॥

जान लो होनी अति बलवान ॥ जान लेउ॰ होनहार अनुसार होय मति गावत वेद पुरान ॥ १ ॥ जान॰- वेदव्यास भीष्म से ज्ञानी-कृष्ण से परम सुजान ॥ जतन किये पर टरी न होनी भारत भयो निदान ॥ जान॰ रावण से पंडित होतब वस खोयो सब बिधज्ञान ॥ दशरथ से नृप नारि के वस हूवै दे बैठे प्रिय प्राण ॥ जान॰ ॥ २ ॥ हरि-जैसी मत दे सोहि कीजै होय न कबहू हान ॥ कर विचार मन धार वडा ओ या

ही मैं कल्याण ॥ जान०॥ ४॥
होनी है जो होय रहै सो व्यर्थ है ज्ञान गुमा
न॥ श्री मथुरेश बुद्धि के प्रेरक अन्तरयामी
जान ॥ जान०॥ ५॥

वार्ता

देखो होनी बलवान है ऐसी कहै
वेद पुराण है॥ भीष्म पितामह वेदव्यास औ
र श्री कृष्ण महाराज ऐसे २ ज्ञानी और सा
मर्थवान पुरुषन ने बहुत जतन किये पर म
हाभारत को युद्ध हुए विना नहीं रह्यो॥
रावण होनहार के वस कुजस कमायो
दशरथ महाराज हू प्राण गमायो॥ यातें
होनी अटल और सब जटल है होनी के
अनुसार ही भगवान हिये में बुद्धि उपजा
वें हैं वेही सब काज करावे हैं यामें कछु भी
सोच नही करनो जो मन में आयो सो ही
आचरणो॥
रसिक महाराज यद्यपि होनी प्रबल है
तो हू मनुष्य कों बुद्धि को बडो बल है॥
भलाई के ग्रहण और बुराई के त्याग को ज
तन सफल है॥
होनी के भरोसे अग्नि में हाथ डारनो

अंग को जरावनो है जान बूझ के अपने को आपत्ति में फंसावनो और लोग हंसावनो है कछु उत्तम फल आवनो नहीं या तैं आप कृपा करके मेरी अरज मानिये घर को चलनो ही भली बात जानिये वेश्या संग को मनोरथ चित्त में न आनिये ॥

(अति क्रोध में होकर) अरे दुष्ट बहुत देर से गाल बजाय रह्यो है

आज हमारो उपदेष्टा बन ग यो है ॥ जा चलो जा मो को मुख ना दि खा ॥ मैं वा परम सुंदरी के दरशन बिना कदापि जीवतो नहीं रहूंगो चाहे सो होय वाही की शरण गहूंगो ॥

(यह कहकर मूर्छित होता है)

रसिक (चेत कराके) अजी गुरू जी २ उठिये धीरज धरिये चलिये अपनी कान्ता से मिलिये

{अजामिल उठ के रसिक लाल के साथ जाता है॥}

वेश्या के मकान के दरवाज़े पर ना-यका को खड़ी पाता है

नायका (बहुत अदब से सलाम करके)

आइये आइये जनाब तशरीफ़ लाइये करम फ़रमाइये (यह कहकर दोनों को अन्दर ले जाती है) (दिलबर गारही है तालीम था पारही है मोह का जाल बिछारही है)

(कसूंबी की चाल में गीत ॥)

सैयां मरोरी मरोरी मरोरी जी न बैयां ॥ तोरे-पैयां परूं घ्याम ॥ सैयां ० — हूंगी मैं नाजुक-मैं नाजुक कमल से हू कोमल ॥ गिरिधारी तेरो नाम ॥ सैयां ० — छूओ न छाती न-छाती मैं हूं घबराती ॥ ये तो कठिन निकाम ॥ सैयां ० — तुम कौ जो भावै जो भावै मो कौं ना सुहावै ॥ मैं हू भोरी बारी बाम ॥ सैयां ० — घूंघट उघारौ उघारौ उघारौ मन प्यारे॥ लजियाऊं घनघ्याम ॥ सैयां ० — मथुरा के स्वामी हो स्वामी निहारे दर्शन से ॥ पावे मन विसराम ॥ सैयां ० —

{ अजामेल कौ यह चीज़ ऐसे भाव बना २ कर सुनाई गई कि उसकी शौक़ की आग और भी ज्यादा भडकने लगी }

अजामिल० वाह वा कैसो उत्तम सुहानो गानो है मेरो मन अत्यन्त लुभानो है ॥

दिलबर० (बहुत अदा से सलाम करके) अजी हुजूर पंडित जी महाराज आज इस

आप की दासी ने अपनो बडो भाग मानो है अति दुर्लभ आप जैसे महात्मा लोगन को दर्शन पानो है ॥ मुझे कुछ गाना तो आता न ही भाव बताया जाता नहीं यह आप की कदरदानी है बनदी पर आप की मेहरबानी है ॥

अजा० (एक मोहर निकाल कर देता है)

दिल०- अजी साहिब यह क्या गज़ब करते हो उलटी गंगा बहाते हो मुझे क्यों शरमिन्दा बनाते हो आप मेरे मेहमान हैं मेरा नज़र करना बजा है माफ़ कीजिये ॥ च्याल तैयार है

अजा० (हंसकर) बस यह तो माफ़ करो आप के तो दर्शनन से ही आनन्द है गयो सारो संताप निवृत भयो

दिल०- (अचंबे से) हैं आपको संताप काहे का था ॥

अजा०- क्या आप नहीं जानती आप ही के नैनों के तीर से घायल होने का संताप था ॥

दिलवर अजी साहिब आप तो न जाने सच फरमाते हैं या नहीं इस बंदी का दिल तो मुर्ग़ नीम बिस्मिल की तरह आप के दर्शन की चाह में तड़प रहा था सिर्फ़ एक मरतबा धर्मशाला के झरोखे में विराजे हुए

आप को देखा था सुनिये मेरी हालत तो उस गोपी की सी होगई

पद

मोहना चलायो नैना तीर हिये में साल र ह्यो अरर अरर २

{ यह सारा पद संगीत विनोद में
{ लिखा है सो सब सुना कर गाया }

अजा० – हाय जुलम करदियो (यह कह कर बेहोश होता है

दिल० – (चेत करा कर) अजी प्रियतम प्राण प्यारे यह दासी तन मन आपपर-वारे हुए खिदमत में हाज़िर है अब इत नी अर्ज़ मेरी मान लीजिये कि ब्यालू कर लीजिये अगर आप नहीं खायेंगे तो भ गवान की क़सम यह बंदी नहीं खावेगी

(अजामिल ब्यालू करने बैठता है दोनों खाना खा रहे हैं

दिलबर० – अजी पंडित जी महाराज असबाब आप का कहां है वहां कौन-हिफ़ाज़त करता होगा ॥

अजा० – हे प्राण प्यारीजी ॥ तुम्हारी जादू भरी नजर ने हमारी यह दिशा करदी नी है कि हम ने वा दिन से अपने तन की-

ही संभाल नहीं कीनी है मन में समाई आ
प का छबि रंग भीनी है राम के भरोसे मा
ल ताल धर्मशाला में ही धरो है॥

दिल० वाह प्यारे वाह आप के माल
ताल की चिन्ता हम को भारी है धर्मशा-
ला में कौन रक्षा कारी है अकसर होती
चोरी चारी है अभी यहां मंगा के अल-
हदा कमरे में रख देती हूं

यह कह कर दिलबर ने नौकर
को आवाज दी

दिल० अरे गारत खां छूट मल सिपा
हियो

नौकर० हाजिर सा हिबो

दिल० अभी जाओ पंडित जी महारा-
ज का माल असबाब धर्मशाला से उठ
वा लाओ रसिकलाल जी को साथ ले जा
ओ॥

रसिक अपने गुरू जी से आज्ञा मांगता है
गुरू जी महाराज क्या हुक्म है

अजा० अच्छो जाओ हमारी प्यारी को
हुकम उठाओ॥

रसिकलाल नौकरों की साथ जा कर माल असबाब उन को संभ लाकर यह चीज़ गाता है और बन को जाता है

पद राग काफ़ी॥

बस नाहीं कछु मेरो ॥ भयो गुरू बैरी को चेरो ॥ नैन बान अस लग्यो हिये बिच मति में छ यो अंधेरो ॥ अरु परै नहीं लाभ हानि कछु बिप त आय अब घेरो ॥ मदन दुख देत घनेरो ॥ बस नाही कछु मेरो ॥ १ ॥

देव तिहारी गत को जानैं वो को मारग तेरो ॥ पचि हारे नाना मत वारे कर नहिं सके नि बेरो जाय कियो बन बन डेरो ॥ बस ॥ २ ॥

मैं अब जग में मुख न दिखाऊं बन हि में करूं बसेरो ॥ ध्यान श्रीमथुरेश हरी को धरि हूं सांझ सवेरो ॥ भयो दृढ नहचो मेरो ॥ बस नाही कछु मेरो ॥ ३ ॥

यह गाता हुआ परदे में जाता है॥

तीसरा दृश्य समाप्त हुआ ॥ ॥

सीन चौथा ॥

प्यारेखां का देहली में दिलबर की बहिन के पास जाना और पागल बन जाना

अख़्तर० (दिलबर की बहिन) उदास होकर) हाय अफ़सोस यह चिट्ठी मेरी प्यारी बहिन दिलबर ने कैसे लिखी अफ़सोस वो एसी संगदिल होगई ॥

मज़मून चिट्ठी का गाकर सुनाती है

गजल

बहिन सुन लो दया करके गुजारिश जो-हमारी है ॥ करो मंज़ूर गर तुम को हमारी जान प्यारी है ॥ ये प्यारेखां जो आता है मेरा आशिक़ कहाता है ॥ अजब बातें बनाता है शरारत इस में भारी है ॥ ये फितना है बडा हुआ यार बस खुद मतलबी मक्कार॥ मुझी पर घात बन के यार कुछ इस ने बिचारी है ॥ तमाम इस का करे जो काम चेरी उस की मैं बेदाम ॥ मेरे दिल पर सुबह और शाम खौफ़-इस का ही तारी है ॥ न हो वो बात पूरी जो तो पागल ही बना छोडो ॥ न इस कारिज से मुंह मोडो ये दिलबर जो से आरी है॥

अख्तर ॥ देखो मैं खूब जानती हूं कि-प्यारेखां नामी एक शरीफ़ ने अपनी सारी उमर की कमाई दिलबर के हवाले करके उस से सच्ची प्रीत लगाई है ॥ आज मेरी बहिन उसका काम तमाम करना चाहती है अफ़सोस २ हमारे पेशे को धिक्कार है इस पर पड़े खुदा की मार ॥ (ज़रा सोच कर) मगर अब बहिन का कहना कैसे न करूं देखूं वो प्यारेखां मेरे पास क्यों कर आता है ईश्वर क्या माजरा दिखाता है ॥ (इन्तिज़ार में बैठी है ॥ ॥

नौकर - (हाथ जोड़ कर) अजी सरकार मैं अभी बाजार से आरहा हूं देखता-क्या हूं कि एक पठान बड़ा खूबसूरत जवान आप का मकान पूछता चला आ रहा है ड्योढी पर खड़ा है मुझे उसने इत्तिला करने को कहा है ॥

अख्तर ० - अच्छा उसे जलदी अंदर ले आ ओ एक कुरसी बिछा कर बिठलाओ मैं एक कमरे में थोड़ी देर के लिये जाती हूं ज़रा बनाव सिंगार करके अभी बाहर आती हूं

(अख्तर कमरे में दाखिल हुई)

प्यारे खां कुरसी पर बैठता है ॥

अख्तर (बाहर आकर बहुत झुक कर सलाम करती है) प्यारे खां उठ कर ताज़ीम देता है ॥

अख्तर जनाब तशरीफ़ रखिये तकल्लुफ़ न कीजिये आप का इस्मे मुबारक तो फ़रमा दीजिये ॥

प्यारे खां ॥ सरकार मुझे प्यारे प्यारे कह-कर पुकारते हैं आप की बहिन दिल बर-नेक अंजाम के पास से आया हूं उसने-मुझे आप को मदद देने के लिये भेजा है खत आप के पास आया होगा ॥

अख्तर जी हां आप मेरी बहिन के आशिक़े सादिक़ मियां प्यारे खां साहिब हैं मैं ने आप को पहिचान लिया आपने बड़ा करम किया फरमाइये रास्ते में कुछ तकलीफ़ तो न हुई ॥

प्यारे खां ० अजी कुछ न पूछिये आठ रोज में बमुशकिल आ पहुंचा हूं मगर तकलीफ़ सब दूर होगई आप के दीदार नसीब होगये सारे संकट मिट गये

अख्तर ० आहा आप बहुत हारे थके आये हैं गुस्ल करके खाना खाइये आराम

फरमाइये और बातचीत बाद में करेंगे ॥

(नौकर गुस्ल कराने ले जाता है)

(अख़तर यह ग़ज़ल गाती है ॥)

ग़ज़ल

है जाने माशूक़ बेवफ़ा ये किसी सयाने ने स च कहा है ॥ बुरा ये पेशा है कसबियों का ज़रा न पाक इसमें भी रहा है ॥

(इतना ही गाने पाई थी कि नौकर गुस्ल करा के प्यारे खां को ले आई और अख़तर गाने से बंद होगई)

प्यारे॰ हैं हैं चुप क्यों होगई कुछ सुनाइये तो सही ॥

अख़तर॰ अजी साहिब गाना तो सुनते ही रहेंगे एक मरतबे खाना नोश फरमालीजिये ॥

(यह कहकर अंदर जाती है ॥)

(अख़तर ने अपनी लौंडी को समझाया कि जब हम दोनों खाना खा चुकें तो इस शीशी में जो दवा रक्खी है वो इस गुलाबी रंग के कांच के गिलास में थोडी डाल कर उसमें शराब मिलाकर ले आना और दूसरे हरे रंग के प्याले में सिरफ शराब लाना ॥)

अख़तर– बाहर आकर खाने में बैठती है

दोनों खाना खा रहे हैं खाना खाने के बाद लौंडी को आवाज देती है

अरी गुल शा बो ॥ ॥

गुल॰ जी सरकार

अख्तर॰ अरी दो प्यालों में थोडी हाजमे वाली शराब ले आ

गुल॰ (शादनी के बस भूल कर दोनों प्यालों में पागल बनानेवाली दवा डाल कर शराब मिलाकर लाती है) दोनों प्याले पीकर पागल बनते हैं और पागल पने की चेष्टा दिखलाते हैं ॥

लौंडी (अफ़सोस और तअज्जुब में होकर) अरे गजब क्या हुवा दोनों पागल बन गये मुझसे गलती हुई शीशी वाली दवा दोनों प्यालों में गिरगई

चौथा दृश्य खतम हुआ

(पांचवां दृश्य)

दिलबर का अजामिल को शराब पिलाना नायका का चोरी की खबर सुनाना अजामिल का दुराचार से द्रव्य कमाना ॥

दिल० बोतल शराब की पास लिये प्याला हाथमें लेकर)
अजी प्राणनाथ बहुत रोज़ गुज़र गये मैंने आपसे अर्ज़ नहीं कीथी आज मेरी तबियत बिलकुल नहीं मानी दिमाग़ में भारी है परेशानी इसलिये अर्ज़ की जाती है कि दिलजानी मेहरबानी करके थोडी सी शराब पीलीजिये दासी को कृतार्थ कीजिये ॥
(यह कहकर प्याले का हाथ आगे बढ़ाती है ॥)

अजा० हाथ से रोक कर सुनो सुनो प्यारी यह तुमने कहा विचारी यह हमारी पीने की वस्तु नहीं है ॥ माफ़ करो (हाथ जोडता है)

दिल० वाह साहब वाह आज तो इधर का सूरज उधर आजावै तौभी मैं हरगिज़ नहीं मानूंगी ॥

अजा॰ देखो यह बहुत निकम्मी चीज़ है हर लेती अकलो तमीज़ है ॥

दिल॰ यह आप का ख़याल गलत है सुनिये ॥

ग़ज़ल ॥

पियो जी अब तो दिल जानी मये गुलनार थोडी सी ॥ गई सब रात बातों में रही दिलदार थोडी सी ॥ न नफ़रत है मुनासिब तुम को मेरी प्यारी चीज़ों से ॥ पियो ख़ुद भी पिला ओ मुझ को करमनुहार थोडी सी ॥ कुप द दुख दूर करती है यह दिल में नूर भरती है ॥ बतौरे आज़मायश ही पियो इक बार थोडी सी ॥ बदै नेकों में नेकी है बदों में भी बदी इससे ॥ करें बदनाम पी के इस को बद किरदार थोडी सी ॥ पियोगे ख़ून दिल नर का जो यह प्याला न पीयोगे ॥ मिरी जां की कसम है पीजिये सरकार थोडी सी ॥

(यह कह कर फिर प्याले को हाथ में लेकर आगे बढती है)

अजा॰ ठैरिये ठैरिये ज़रा मेरी भी एक चीज़ सुन लीजिये ॥

(यह कहकर अजामिल गाता है ॥)

केथ विन कैसे जीऊंगी इस के वजन पर ॥
मद्य के औगुन सुन लोरे ॥ चतुरन कहे विचार म०
विदा होत मति पियत ही लाज सरम उठ जाय ॥
वस में रहैं न इन्द्रियां सरवस ज्ञान नसाय ॥ मद्य के १
तन छीजै धन हू नसै जन होवै बल हीन ॥
नास होय तप तेज को मन हू सदा मलीन ॥ मद्य के० २
द्विज हत्या मद पान यह पातक कहे समान ॥
सुरन दिये बहु श्राप हैं पाप मद्य में जान ॥ मद्य के० ३
मद सेवी को होत है हिरदो परम कठोर ॥
पर तिय गामी द्यूत रत होवै बढ़िया चोर ॥ मद्य के० ४
मद सेवी के वचन को नहीं कबहू विश्वास ॥
करैं निरादर संत जन रहै सदैव उदास ॥ मद्य के० ५
सब औगुन की खान है सत्य जान मद पान ॥
मथुरा इक मुख तैं कहौ केह विध करै बखान ॥ म० ६

{इस पद के सुनते ही दिलवर गुस्से से लाल मुंह कर}
{के प्याला हाथ से फेंक कर चलने लगी}

अजा०-(घबरा कर खड़ा होकर) हैं हैं प्राण प्यारी-
कहां जाती हो मेरी आत्मा को क्यों सता
ती हो मैं तुम्हारे बिना एक छिन भी जीव
तो नहीं रह सकूं हूं आप के वियोग को
दुख कदापि नहीं सह सकूं हूं छमा करो
(यह कहकर हाथ पकड़ता है)
दिल०-(खफ़ा होकर झटका देकर हाथ छुड़ाकर)

बस २ खबरदार झूठी बातें न बना ओ बनाव ट की मुहब्बत किसी और को दिखा ओ मैं अच्छी तरह जान गई कि आप को मेरी साथ हरगिज़ प्रीत नहीं है ॥

अजा०-(हाथ जोड़कर) प्यारी यह आपने कैसी समझी ॥

दिल०-देखौ मैंने मेरी जान की क़सम दिलाई आ पकौ ज़रा भी दया न आई और ऐसी ज़ टल सुनाई जो बगला भगत या जगत कौ ठगने वाले वाचक ज्ञानी लोग महज़ गलत किया करते हैं मैं अब हरगिज़ जिन्दा न र हूंगी अभी अपना गला काट कर मरूंगी

अजा०-माफ़ करौ प्यारी माफ़ करौ लो मैं अभी पि ये लेता हूं अपने हाथ से प्याला भर कर पि ला दीजिये अपराध छमा कीजिये ॥

(दिलबर बैठती है प्याला देती है अजामिल पीता है)

अजा० (एक प्याला पीकर) आहा यह तो साक्षात अमृत है पियत ही आनंद आय गयो अब मेरे मन में कछु संदेह नाहि रह्यो तुमने सची कही जरा और देउ ॥

दिल० (बहुत खुश होकर) हां प्यारे देखौ मैं सच कहती थी अब तीन पात्र तो लेने ही पड़ेंगे

(तीन प्याले भर भर कर पिलाती है)

अजा॰ लो अब आप भी मेरे हाथ से पियो (यह कहकर प्याला देता है) (दोनों पीते पीते नशे में चूर होते हैं अजामिल खड़ा होकर प्याला हाथ में लेकर नाचता है)॥

नायका॰ (सोच में भरी हुई आकर) ऐ है ग़ज़ब होगया हाय ग़जब (ऐसा कहती पुकारती है)

दिल॰— हैं हैं अम्माजान क्या हुवा क्या हुवा कहिये तो ॥ ॥

नायका॰ अरी क्या कहूं अब इस नगर में रहना हराम होगया क्या कहूं बेटी ग़ज़ब होगया

दिल॰—कहो तो सही क्या हुवा ॥

नायका॰—बेटी क्या कहूं जिस कमरे में पंडित जी महाराज का सामान रखा था उस में नकब(सेंध) लग गया न वहां पंडित का संदूक है न तेरे जेवर का बकस दिन धाड़े लुटगई

दिल॰—(बहुत रंज करती है) और अजामिल से पूछती है कि प्यारे आप के संदूक में क्या क्या चीज़ थी ॥

अजा॰—(गहरा सांस लेकर) हाय कहा पूछो हो जो कुछ हो वाही में हो (हाय देव कहा भयो)

दिल॰—प्यारे घबराओ मत बताओ तो सही उसमें क्या २ चीज़ थी ॥

अजा० — प्यारी कहा बताऊं एक कंठा पन्ना को राजाजी ने दियो हो तो ह एक ही दस हजार रुपैया को हो और पांचसौ मोहर और पांच जेवर जडाऊ बडे भारी मोल के हते (यह कह कर मूर्छित होता है)

दिल० — प्यारे चेत करो चेत करो धीरज धरो कोई चिन्ता की बात नहीं है उठो उठो

अजा० — (चेतकरके) अच्छो प्यारी जो भयो सो भयो अब जितनो धन गयो है वासे चौगुनो कमाय कर ना लाऊं तो प्यारी को मुंह न दिखाऊंगो ॥ (यह कहकर बाहर जाता है)

(अजामिल नगर से बाहर आया वहां एक पठान से जिस का नाम राजदारखां था मुलाक़ात हुई ॥

राजदारखां० पंडितजी आज किधर को अकेले जा रहे हैं कहिये तो सही क्या बात है आपके जिस्म क्यों कुमला रहे हैं

अजा० — (खडा होकर) भैया मैंने तुम्हें नाहिं पहिचानो तुम मो को कैसे जानो हो

राज० — वाह खूब कही आपको कौन नहीं जानता है आप दिलबरजान वाले पंडितजी हैं ॥

अजा० हां भैया हूं तो वोही पर अब जीनो वृथा है मरने को जाऊं हूं । मेरो हाल कहा सुना

राज़० – नहीं कहिये तो सही आप को खुदा की क़सम है जो बात हो सो कहदो

अजामिल यह हाल गाकर सुनाता है ॥

(इन्दर सभा की चाल)

सुनो मित्र प्यारे मेरे दिल की बात ॥ करी मुझ पै-चोरों ने इक भारी घात ॥ मेरी प्यारी दिलबर का जेवर नया ॥ जो था और मेरा भी सब धन गया ॥ मैं प्यारी को अब मूं दिखाऊं नहीं ॥ बहुत धन मैं जबतक कमाऊं नहीं ॥ जतन कोई मुझको बता दीजिये ॥ दुखी दीन जन पर दया कीजिये ॥

(जवाब गाकर देता है)

राज़० –

सुनो दोस्त इतना न घबराइये ॥ मैं जो कुछ कहूं उस को चित लाइये ॥ जमादार इस जा मेरा मीर है ॥ बहुत सी उसे याद तदबीर है ॥ न कर देर जल्दी मेरे साथ चल ॥ अभी होगी सब आप की महनत सफल ॥

(यह कहकर दोनों जमादार के मकान पर जाते हैं)

जमादार (मिलनसार अली इसका नाम है)

आओ राज़दार खां बहुत दिनों में आये
कहो यह कौन साहिब हैं जिनको साथ लाये ॥

राज़० – जनाब यह पंडित साहिब बड़ी मुसीबत में

गिरफ़ारहैं सब हाल कहकर सुनाताहै)
(जमादार गाकर जवाब देता है ॥)

गज़ल

न चोरीसे कोई बेहतर जतन है धन कमाने का
मिलै हरगिज़ न नि र्धन को मज़ा नरतन के पानेका
नहीं देखा किसीने बाद मरने के जो होना है ॥
नरक दोज़ख ख़याली चीज़ हैं जरिया डराने का ॥
न पैसे बिन मिलै माशूक़ महरू चारदह साला है॥
बिना महबूब के मौक़ा ही क्या है लुत्फ़ उठाने का ॥
भरे हैं नौकरी में सैकड़ों खतरे हजारों दुख ॥ ॥
तिजारत में भी अंदेशा है पूंजी बीत जाने का ॥

जमादार सुनो पंडित जी धन कमाने के वास्ते चोरी से बेहतर कोई तदबीर नहीं है ॥

अजा० अजी साहिब यह काम तो बहुत ही कठिन है इस में भय तो छिन छिन है

जमा०—भाई इस विद्या को अच्छे उस्ताद से सीख कर करै तो न इस में कोई खौफ़ है न कुछ मुश्किल है ॥

अजा० अच्छा जमादार जी आप ही हमारे उस्ताद सही बताओ कैसे करें ॥

जमा० देखो मैं चौकीदारों का जमादार हूं मुलाज़िमे सरकार हूं जितने पहिरेदार हैं
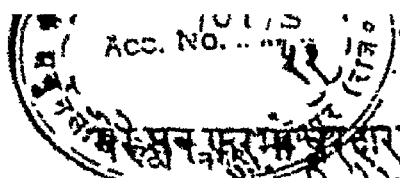
मेरे हुक्म फ़रमांबरदार हैं दरोगा जी जो मेरे अफ़सर हैं वे भी मेरे मकान पर आते जाते अक्सर हैं मैं उनकी नज़र भेट करता रहता हूं वे वोही करते हैं जो मैं कहता हूं ॥ मटरगश्त बेग ख़ाब अली मिश्रामल ग़फ़लत ख़ां जितने सिपाही हैं सब मेरे हमराही हैं मगर मैं चोरी के माल में आधा हिस्सा लेता हूं उसी मैं से साथियों को भी बांट देता हूं। यह बात मंजूर हो तो बिस्मिल्लाह कीजिये बचन दीजिये ॥

अजा॰ (बचन देकर) लेउ बचन तो दिये परंत यह काम मैं ने किया तो है ही नाहिं सिखाओ तो सही ॥

जमादार॰ (राज़दार ख़ां से) राज़दार जल्द पंडित जी को रूमालया गूजर कुमलिया मीने और कमद ख़ां बहादुर के पास लेजा इन को उन से विद्या सिखलवा, पीछे आज़मायश के बाद हमारे पास लेआ

(राज़दार ख़ां तामील हुक्म करता है)

अजा॰ (तीनों से) भैया आओ तुम्हारो नाम रूमलिया कुमलिया कैसे भयो

(तीनों उत्तर देते हैं) देखो रूमाल गले में डालकर एक पल भर में आदमी को मार डालते

यह विद्या मुझै खूब आवै है यासे रूमलिया ना
म है ॥ (और कूमलिया कहता है) मैं पक्की से
पक्की भीत मैं कूमल रोडो लगानो जानूं हूं
या तै कूमलिया कहाऊं हूं (कमंद खां कहता
है) मैं ऊंचे से ऊंचे मकान की दीवार पर क
मंद लगा के चढनो जानूं हूं ॥

अजा० — अच्छो तो तीनों काम मुझे सिखाय दे॥
 { तीनों अजामिल को सिखाने लेजाते हैं }

अजा० (काम सीख कर एक सेठ के मकान में चोरी-
 कर के बहुत सा माल लेकर जमादार के पास
 आता है)

अजा० (जमादार से) लीजिये जमादार जी आधो-
 माल लेके आधो मोको देदीजिये

जमादार — आहा बच्चा तू बडा ईमानदार है जा इ-
 स दफ़ा हमने माफ़ किया यह माल-
 अपने घर लेजा पर यह बता कि कैसे
 चोरी करके लाया है

अजा० — साहिब कहा पूछौ हौ एक मकान मैं से
 ठ को बेटा और बाकी बहू सोवै है मैं कू
 मिल लगाय भीतर धस्यो यह सब माल
 हाथ आय गयो अब आप की मेहरबा
 नी से सब ही लिये जाऊं हूं
 (यह कहकर सारा माल लेकर घर आता है

और दिलबर को सब माल हवाले करके सारा किस्सा सुनाता है ॥)

(दूसरे दिन एक मुसाफ़िर को रूमाल डालकर मार के धन लाता है जमादार आधा लेकर खुश होता है अजामिल उस को हाल कह सुनाता है और माल ले कर दिलबर के पास आता है

फिर एक बार एक लडके को मारकर उस का ज़ेवर उतार उसे कूवे में डाल जमादार के पास आता है किस्सा सुनाता है और आधा माल ले कर दिलबर के पास जाता है

॥ छठा सीन ॥

(साधू मंडली का अजामिल के घर आना और पुत्र का नाम नारायण रखने को कह जाना ॥ उसी के अनुसार अजामिल का बरताव करना ॥)

{साधु मंडली गाती हुई नगर में आती है ॥ ॥}

पद

भजन है दुख हरण जन हरि भजन है दुख हरण

सकल बंधन के कटन कौ नाहि दूजो शरणा ॥
जन हरि० अतुल धन अरु राज्य त्रभुवन विष-
य सुख बहु वरणा ॥ अचल बल विद्या पराक्रम
नाहिं ये सुख करणा ॥ जन० १ छुटत ना
काहू जतन से जन्म पुन पुन मरणा ॥ पाई सं
तन मुक्ति के बल गहे जब हरि चरणा ॥
जन०२ ॥ प्रेम तैं हरि भजन में रति होय तब उ
द्धरणा ॥ कहै श्रुति मथुरेश राधे नाम तारण
तरणा ॥ जन हरि० ३ ॥

{मार्ग में संत मंडली को एक भंगडियों का अखाडा
निजर पडना भंगडियों से बात चीत होना }

एक भंगड दूसरे से कहता है — अरे भैया वो कहा त
मासो सो आय रह्यो है इन में एक लडका-
कैसो सुन्दर गाय रह्यो है प्यारी अदा दिखाय-
सभन को रिझाय रह्यो है ॥

दूसरा भंगड— हां हां भैया या के आगे लुगैया हू क-
हा माल है कैसे गोरे गोरे गाल हैं यह स
ब वैरागी साधू से दिखाई देवैं हैं गावत
कहा हैं चित्त को चुराये लेवैं हैं

(दोनों भंगड साधुओं के निकट जाकर) बाबा जी
डंडौत ॥

साधू— चिरंजीव रहो बच्चा ॥

भँगड़॰ महाराज यह छोटे से साधू तो बहुत सुंदर हैं इन को रूप अति मनोहर है॥

साधु॰ - बच्चा साधू लोगन को रूप रंग कहा देखै है हमारे तो भजन और तप येही परम धन है याही मैं मन मगन है॥ यहां को ई भक्त जन रहै हैं तो उन को घर हमैं बतराय दे राम जी तेरो भलो करैंगे॥

भँगड़ - महाराज आप भक्तन को घर ढूंढो हो चलो हम बतावैं॥
भँगड़ साधू मंडली को दिलवर के मकान के दरवाजे पर ले जाते हैं और छोड़कर चले जाते हैं साधू उसके दरवाजे पर टेर लगाते हैं और यह चीज़ गाते हैं॥

(घनश्याम के वजन पर)

गोपाल गोपाल गोपाल॥—
गोपाल भजन कर चरण हिये मैं धर मानुष तन फल पावै गोपाल॥
है भजन से संकट जाता आनंद सिंधु लहराता है विमुख अंत पछताता कोई हर गिन काम न आता॥ हरि नाम ने लाखन तारे॥ नैया लागत जाय किनारे॥ यहां दीसत नंद दुलारे॥ प्यारे ठारे हैं बांह पसारे॥ कहै मथुरा दास हरि थल निवास अब वेग हि चरण लगावै॥ गोपाल॰—

{गाने सुन कर अजामिल मकान से बाहर आता है}

अजा०—(साधु मंडली को साष्टांग दंडवत करके) आहा आज मेरो धन्य भाग है जो संत समाज ने या स्थान पर पधार कर मो को कृत्य २ करदीनो ॥

संत०—अच्छा बच्चा उठो उठो रामजी भलो करेंगे (यह कहकर पृथवी पर से अजामिल को उठाते हैं ॥)

अजा० (हाथ जोडकर) महाराज विराजिये (यह कहिकर सब संतों को आसन देता है) (फिर जल लाकर सब के चरण धोता है)

संत०—बच्चा तू बडो प्रेमी दीखै है तेरो नाम कहा है ॥

अजा० (हाथ जोडकर) नाम बतलाता है ॥ फिर संत लोग बैठ कर गाते हैं और दिलबर भी अंदर से आकर प्रणाम करके भजन सुनने बैठती है ॥

(मज़ा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंगरवाले)
(इस के वज़न पर)

नहिं हरि सुमिरन बिन कल्यान येही निश्चय करके जानो ॥ जग में भरे सकल छल छंद।

या मैं चित्त मत दे मति मंद ॥ भजिये पूरण पर मानन्द ॥ सांचो हित वोही निज मानौ ॥ नहि ० - जकडे पुन्य पाप की डोर ॥ भोगे प्राणी सुख दुख घोर ॥ नाहीं कर्मन को है छोर ॥ जग है कारागार पिछानो ॥ नहि ० कर के पुन्य स्वर्ग मैं जाय ॥ बीते फिर यही जग मैं आय ॥ पुन पुन गर्भ माहिं पछताय ॥ डोलै चौरासी भरमानो ॥ नहि ० जब ही कृपा करै मथुरेश ॥ नासै जन्म मरण को क्लेश ॥ प्रेमी मन मैं मगन हमेश ॥ जीवन मुक्त रहै हरषानो ॥ नहि ० -

---

अजा ० - हे संतो आपके दर्शन से मेरे चित्त मैं अत्यन्त आनन्द भयो सारो संताप गयो है ॥ अब कृपा करके भोजन प्रसाद पाइये ॥ पीछै कछु ऐसो मोको सहज उपाय बताइये जासे पापी मन भजन मैं लगै

(यह कहकर भोजन सामग्री लाता है और साधुओं को प्रेम से जिमाता है ॥

संत लोग ० (जीमन करके प्रसन्न होय बोलते हैं)

दोहा ० सुनहु अजामिल अति कठिन मन को होय निरोध ॥ बिन मन के जीते नहीं होवे आतम बोध ॥ यातें अति दुर्लभ कह्यो -

ज्ञान पंथ भगवन्त ॥ हरि को नाम तुरंत ही करै क्लेश को अंत ॥ सो तुम जपौ लगाय मन ये ही सहज उपाय ॥ निश्चय याही जतन से चौरासी दुख जाय ॥

वार्ता ॥

देखौ अजामिल मन को रोकनो अत्यन्त कठिन है वा बिना ज्ञान को होनो असंभव है याही तैं ज्ञान मार्ग अति दुर्लभ है ॥ भगवत नाम को प्रेम पूर्वक जपनो सहज उपाय है यातैं सारे जन्म मरण को दुख मिट जाय है सो तुम भगवत नाम जपो करौ ॥

अजा० — महाराज मैं बहुत जतन कर देखो परंतु एक छिन भी मेरो पापी मन भजन में नाहिं लगे है कहा करूं आपके संमुख सत्य कहूं हूं मो से यह बात नहीं बनती दीखे है ॥

संत० — अच्छो तो एक बात हम कहैं सो अवश्य करियो जो अब तेरे पुत्र होय वाको नाम नारायण धरियो ॥

अजा० — महाराज यह तो आप बहुत सुगम उपाय बतायो मेरी या स्त्री में महीना एक में ही संतान होयवे वारी है सो पुत्र हुवो

तौ अवश्य या कौ नाम नारायण धरूंगो
(संत लोग विदा होते हैं)

(भगवान के पार्षद और यमराज के दूतों का सम्बाद)

(दिलबर अजामिल और उनका पुत्र नारायण नामी बैठे हुए दिखाई देते हैं ॥)

दिल० - (अजामिल से) हे प्राण नाथ देखिये यह बालक मेरी बनिसबत आप से अधिक हिल रहा है यद्यपि मैंने इसकी परवरिश में कैसा २ कष्ट सहा है आप जानते ही हैं

अजा० प्यारी जी यह तो सच्ची कहो हो मोसे हिलतो रह्यो है पर मा अंत में मा ही होय है देखो परीक्षा करें ॥ ॥

दिल० - महाराज कैसी परीक्षा करोगे ॥

अजा० अच्छा पहिले नारायण को कहीं दूर पठाय दो ॥ ॥

दिल० - (नारायण से) अच्छा बेटे तुम अपनी नानी के पास जाकर पानदान ले आवो ॥

(नारायण जाता है)

अजा॰ देखौ प्यारी या बालक कौ नारंगी बहुत भा
वै है सो तुम जानौ ही हो एक नारंगी साम
ने रख देउ और याकौ बुलाय के कहौ कि
जो तोय अधिक प्यारो होय वाकौ यह ना
रंगी देदे ॥

बालक को बुलाय इसी प्रकार किया जाय है बा-
लक वो नारंगी अजामिल के हाथ में देता है अ
जामिल बहुत राज़ी होकर गोद में लेता है और
यह चीज़ गाकर नाचता है

धन धन मेरो भाग धन धन मेरो भाग
ऐसो कुंवर मैं पायो ॥ धन॰ —

ऐसो सुन्दर रूप मनोहर मदन हू देख लजावै ॥
प्यारी प्यारी मीठी याकी बानी मोको भावै ॥ धन॰१
एक हू छिन याके देखे बिन कल है मोको नाही
या ललुआ की सुध नहिं भूलूं सपने हू के मांही ॥
धन॰२ ॥ मेरे मैं निज जननी हू तें प्रेम करै-
यह भारी ॥ संतन की यह तो परशादी तन मन
यापै वारी ॥ धन॰३ ॥ याको नाम धरो नारा-
यण सन्तन मोहि बतायो ॥ चलत फिरत अरु
सोवत जागत जात नहीं बिसरायो ॥ धन॰-४

(यह गाता हुआ अजामिल परदे में जाता है)

(बाहर नायका और दिलबर की बातचीत)

नायका॰ अरी दिलबर आज नारायण को मैंने पास तूने पान दान लेने भेजा था ॥

दिल॰ – हां अम्माजी आज तो नारायण का इम्तिहान होगया उसे तो पंडित जी ही ज्यादा प्यारे हैं ॥

नायका तो क्या हुवा बेटी बडा जाने दिया बालक जाने हिया पंडितजी को नारायण प्यारा भी तो ज्यादा है चलो बाजार से कुछ मेवा ले आवें

{ दोनों बाजार जाकर घर को आती हैं }
{ और अजामिल को बीमार पड़ा पाती है }

नायका (अजामिल से) यो हे पंडितजी आज कैसे पडे हो ॥

अजा॰ – मोसे कोई मत बोलो मेरे बदन में बडी भारी चेक गी है बुखार के मारे चित्त में भ ची हल चली है जी बहुत घबराय है काहू की बोल चाल नाहिं सुहाय है ॥

(इतना कहकर अचेत होजाता है)

नायका॰ (दिलबर से) अरी बेटी क्या गजब हुआ। पंडितजी तो अध मुवा सा होगया ॥ देख इस को बुखार कैसा तेज है ॥

दिल॰ (बदन के हाथ लगाकर) ओ हो अम्माजी मुझ से तो हाथ भी नहीं लगाया जाता भली

हकीमको बुलाओ नवज़ दिखलाओ
(यह कहकर दोनों बाहर आती हैं॥)
{ दक्षिण दिशासे एक घोर शब्द होता आता है
पकडो बांधो मारो इस दुष्ट को ले चलो इत्यादि }

{अजामिल इस भयानक शब्द को सुनकर घबरा कर देखता है तो उसे तीन महा भयंकर रूप नीले काले कपडे पहिने हुए जम के दूत दिखाई देते हैं एक के हाथ में फांसी एक के मुदगर एक कोडे फटकारता आता है॥ अजामिल भयभीत होकर कांप रहा है वो तीनों झपट कर इस के पास आए एक ने कोडे मारना आरंभ किया दूसरे ने मुदगर उठाया तीसरा फांसी दिखा रहा है अब अजामिल घबरा के अपने बेटे नारायण को पुकारता है }

अजा॰ – अरे नारायण, हो नारायण, नारायणहो
(बहुत जोरसे पुकारता है)
यह शब्द सुनकर चार विष्णु भगवान के पार्षद चले आते हैं चारों अति सुंदर मनोहर भेषधारी शंख चक्र गदा पद्म हाथों में लिये हुए १६।१६ वर्ष की अवस्था वाले हैं आते ही जम के दूतों को धमकाते हैं उनको देखते ही जम के दूत–

दूर हट जाते हैं ॥

वचन पार्षदों का यम दूतों के प्रति

घनश्याम २ के भजन पर पद

तुम कौन तुम कौन तुम कौन ॥ तुम कौन दुष्टजन रिष्टपुष्ट तन हरिजन के दुख दाता ॥ तुम०

(वचन यम दूतों का)

हम हैं जम दूत कहाते ॥ स्वामी का हुकम उठाते ॥ हम प्राणिन को ले जाते ॥ करनी उनकी भुगवाते

(वचन पार्षदों का)

तुम हो सगरे अज्ञानी हम बात यह नीके जानी हरि नाम जो लेवै प्रानी ताकी होय सभी अघ हानी रक्षा के हेत हरिनाम लेत सो कबहू दुख नहिं पाता ॥ तुम कौन ॥

(वचन यम दूतों का)

यह अधम पातकी प्रानी ॥ हम नीकी विध यह जानी ॥ हरि नाम से या को है ग्लानी ॥ सुत नाम की निकसी बानी ॥

वचन पार्षदों का ॥

हरि नाम अचिन्त्य प्रभाऊ ॥ अघ मोचन सहज सुभाऊ ॥ नहि नेम है भाव कुभाऊ ॥ येही वेद बतायो उपाऊ ॥ मथुरेश नाम सब सुख को धाम ॥ वोही सब विध है जन त्राता ॥ तुम कौन ०—

वचनिका ॥

पार्षद—(यमदूतों को ताडना करके) अरे दुष्टो तुम कौन हो विचार में अति गौन हो या हरि-जन को क्यों सताओ हो ॥ वृथा क्यों गाल बजाओ हो ॥ खबरदार इस के हाथ न लगाओ ॥

यमदूत०—(डर कर) हम धर्मराज के दूत यमपुरी से आये हैं या दुष्टात्मा के लेन कौं धाये हैं ॥ श्री धर्मराज ने याही काज हम पठाये हैं उन के शुभ अशुभ कर्मन को फल भुगायबो येही हमारो काम है धर्म दूत हमारो नाम है

पार्षद०—अरे तुम तीनौं महा मूर्ख अज्ञानी हौ-वृथा धर्म दूत होयबे के अभिमानी हौ जो श्री हरि को नाम उच्चारण करे है ॥ और जो आपत्ति काल में रक्षा के हेत भगवत नाम को पुकारे है वाके सारे कष्ट-यह भगवत नाम ही निवारे है ॥

यमदूत० सुनिये महाराज यह जो प्राणी है महा-पापी कुकर्म की मूरत परम अज्ञानी है ॥ भगवत नाम से या को ग्लानी है ॥ सुत के नाम की या के मुख से निकसी बानी है ॥ ॥

पार्षद०-अरे मूरखौं तुम नहीं जानौ हौ हरिनाम कौ अचिन्त्त प्रभाव है पापन कौ नाश करनो यह तौ याकौ सहज सुभाव है भाव कुभाव कौ यामें तनक भी नेम नहीं है॥ -जैसे अग्नि में जरायवे की सामर्थ वनेर ही है चाहै भाव से वामें हाथ डारौ चाहै कुभाव से —— अग्नि तौ जरावै ही है तैसे ही हरिनाम कौ चाहै भाव से लेउ चाहै कुभाव से वो तौ पापन कौ नसावै ही है बस यहां से चले जाओ याप्राणी के निकट न आओ यदि अब हाथ बढाओगे तुरंत भस्म होजाओगे॥

{ वचन यमदूतों का }

दोहा॥

पूछत हैं हम जोर कर कहिये श्रीमहाराज।
कौन देव हैं आप इत थाये कौनहि काज॥
मरजादा जो धर्म की चाहत मेटन ताहि॥
सतपुरुषन कौ बात यह उचित है कबहू नाहि

(वचन पार्षदों का॥)

कहौ धर्म कहा वस्तु है करकै तत्त्व विचार
पाछैं उत्तर श्रवण करि समाधान उर धार

(वचन यमदूतों का॥)

वेद कह्यो सो धर्म है ता विपरीत अधर्म
उपजै पाप अधर्म से यही जानिये मर्म ॥

बचन पार्षदों का ॥

प्रायश्चित्त हू पाप कौ दीनो वेद बताय ॥
सो तुम चीनत वा नहीं कहौ हमैं समझाय ॥

बचन यम दूतों का ॥

तप तीरथ व्रत नेम जो प्रायश्चित्त विधान ॥
सो या ने कछु ना किये पापन की यह खान
यातें पापी जीव यह अवश्य दंड के जोग ॥
भोगे विन छूटै नहीं पाप कर्म फल भोग ॥

बचन पार्षदोंका ॥ ॥ पद रागभैरवी ॥

है हरिनाम परम सुखदाई महिमा वेदन गाई है ॥ अधम उधारण भव भय हारण कीरत जग में छाई है ॥ तीरथ व्रत तप संजम सारे यद्यपि पाप मोचन हारे ॥ नाम विना को उनाहि उवारे नामहि की अधिकाई है ॥ १ ॥ हास खेल वा वैर भाव से नाम जो लेत चाव-सेरे ॥ मुक्त होय वा के प्रभाव से धन्य नाम-प्रभुताई है ॥ २ ॥
जाने विन हू अगिन जरावै जड़ी मंत्र मणि फल लावै ॥ त्यौं हरि नाम प्रभाव जनावै-जान अजान सब ठाई है ॥ ३ ॥ —

मरा मरा अस ब्याध रटे तैं भयो सिध्द सब बंध कटे ॥ बालमीक प्रघटे मुनिनायक नाम हि से निध पाई है ॥ ४ ॥
या प्राणी पातक जो कीने नसे नाम मुख तैं लीने ॥ श्री मथुरेश नाम गुण चीने अंत मैं अवश्य सहाई है ॥ ५ ॥

(वार्ता ॥)

हरि नाम परम सुखदाई है याकी महिमा वेद ने गाई है यह अधम पापी जीवन को उध्दार करन हारो है भव के भय को हरन हारो है ॥ यद्यपि तप व्रत तीरथ आदि पापन कौ भंजन हारे हैं परंतु नाम के विना जीव को कोई नाहिं उबारै है ॥ भगवत को नाम चाहे हंसी खेल मैं चाहे बैर भाव से ले वाके प्रभाव से मुक्ति होय है ऐसो निश्चय जान ले ॥ जैसे अग्नि जान अजाने सब कौ जरावै है और जडी बूंटी तथा मणि और मंत्र जान अजान सब कौ फल दिखलावै हैं तैसे नाम चाहे जानकर लेवै चाहे विना जाने यातैं तौ उत्तम गति हीं पावै है ॥ देखौ बालमीक मुनि व्याध शरीर से मरा मरा ऐसे रटे तैं ही सिध्द मुनि कहाये तो भगवत नाम से कौन सद्गति नपाये या अजामिल ने

जितने पाप किये नारायण नाम लिये तें सब नास को प्राप्त कर दिये यातें अधिक कहा प्रायश्चित्त होय गो अब तुम्हारे प्रश्न को उत्तर हम ने भली भांत दे दीनों जाओ यहां से चले जाओ फिर कभी हरि नाम उच्चारण करने हारे के निकट न आओ ॥

यह कह कर यम दूतों को फिर ताड ना कर ने हैं वे पिट कर भाग जाते हैं और भग वत पार्षद भी अंतर्धान होजाते हैं ॥

आठवां दृश्य ॥

धर्मराज की कचहरी में यम दूतों और धर्म राज की बात चीत ॥ ॥ ॥

(कचहरी में श्री धर्मराज विराजे हुए हैं और चित्र गुप्तजी सामने बैठे हुए प्राणियों की क र्म पत्रिकायें सुना रहे हैं ॥ यम दूत पार्षदों के ता डे हुए वहां पहुंचते हैं ॥

दूत ०(पुकार २ दुहाई देते पुकार कर) दुहाई है दुहाई है ॥

चित्रगुप्तजी— अरे क्यौं पुकारते हो ॥

दूत— महाराज पहिले हमें यह बताय देउ कि प्राणिन के शुभ अशुभ कर्मन को फल भुगावे हारे हमारे स्वामी केवल एक ही यह धर्मराज हैं अथवा दस बीस और भी करते यह काज हैं ॥

चित्रगु॰ अरे दूतो आज तुम को कहा भयो है यह प्रश्न तुम्हारो सर्वथा नयो है स्वामी धर्मराज हू कहूं दस बीस भये हैं तुम्हारे विवेक विचार कैसे नष्ट ह्वै गये हैं ॥

धर्मराज— (चित्रगुप्त जी से) यह दूत कहा बकरहे हैं

चित्रगु॰— महाराज यह पागल से दिखाई देवें हैं ॥

धर्मराज—(दूतों से) अरे तुम कहा कहो हो कहौ ॥

दूत—(आकर)

चौपाई ॥

सुनहु नाथ यह विनय हमारी ॥ अचरज हम देख्यो इक भारी ॥ पापी एक अजामिल नामा ॥ सकल पातकन को है धामा ॥ ताको लेन गए हम आजू ॥ देख्यो तहां अनील समाजू ॥ चार पुरुष तहां आसिधाये ॥ रूप मनोहर भेस सुहाये ॥ शंख चक्र आयुध कर लीने ॥ आय हमारे आयुध छीने ॥ ताड़ हमें धमकायो भारी ॥

आये हैं हम शरण तिहारी ॥ वे हैं कौन हमें ब
तलाओ ॥ आप तें अधिक कौन प्रघटायो ॥
अब हम मर्त्य लोक नहि जै हैं ॥ अपनि प्रति
ष्ठा नाहि गमै हैं ॥

वचन धर्मराजके

चौपाई ॥

कहौ दूत निश्चय कर बानी ॥ कौन काज उन
अस मति ठानी ॥

दूत —— चौपाई ॥

महाराज करिये परतीती ॥ उन कीनी बिन हे
तु अनीती ॥ नारायण यह नाम सुवन को ॥
कियो अजामिल मतो मिलन को ॥ सो तेह
नाम पुकारन लाग्यो ॥ मन वाको सुत में अ
नुराग्यो ॥ यह बानी सुन चारौं धाये ॥ हमें ता
ड बहु गाल बजाये ॥

धर्म० —— दोहा ॥

अहो दूत गण है नहीं या में कछू अनीत ॥१
उन कीनी सो उचित है तुम चीनो विप्रीत ॥ ॥
उन चारन को दिव्य तन विष्णु पार्षद जान ॥
दरस परस उनके किये होय तुरत कल्यान ॥
॥ उन महिमा हरिनाम की जो कछु बरनन कीन

सो सांची कर मानिये ता मैं मेष न मीन ॥
॥ जाके मुख तें निकसतो सुन लो हरि को नाम
॥ भूले हू मत जाइयो कबहू वाके ठाम ॥ ॥
ग्राह गहे गज साह कौ और न पाई राह ॥
वाह वाह गुण नाम को वाहे गही हरि नाह

{यह सुनकर दूतौं का विदा होजाना
-परदे का आना}

नवां दृश्य ॥

{अजामिल का बैकुंठ कौ जाना औ
बैकुंठनाथ के दर्शन पाना ॥}

{अजामिल बिसतर से उठ कर अचंबे में आकर
देखता है ॥}

अजा० — अरे मैं सोवत हूं कि जागत - यह कहा भयो आज मैं कृत्य कृत्य भयो सारो संकट गयो ॥ अरे वे चारौं देव कहां-सिधारगये ॥ (चारौं तरफ़ देखता है)

(फिर कहता है) ओहो उन भयंकर तीन मूर्तियों और उन परम मनोहर चारों सुंदर स्वरूपों के आपस में बात चीत जो भई सो मैं सब सुनरह्यो हो ॥ धन्य है भगवत नाम की महिमा – मैं ने केवल पुत्र के प्रेम और मोह के जाल मैं फंस कर अपने पुत्र नारायण कौं पुकारो हो वाही को प्रताप यह देखने में आयो कि जम दूत कौ मारके निकास दियो यदि सांची प्रीत लगाय कैं भगवत नाम को सुमिरन बनै तौ कहा कहनो हैं ॥ धिक्कार है धिक्कार है मो पापी जड को और धन्य धन्य है भगवत – नाम कौ ॥

(पद गाता है)

(आके तुमरे अब द्वार ॥ इसके तर्ज़ पर)

पद ॥

जग मैं मानुष तन पाय हाय मैं वृथा जन्म खोयो ॥ पाप कर्म कर धर्म गमायो काम बलो मोय अंध बनायो, हरि चरणान मन नाहिं लगायो, मोह नींद सोयो ॥ जग० १ ॥ परम पवित्र विप्र कुल आयो विद्या पढ बहु सुजस कमायो हाय कुमति बस सब हि नसायो अंत मूढ रोयो ॥ जग० २ ॥ निन्दित गणिका संग त-

कीनी कितनी हत्या सिरपर लीनी काम ब-
ली मेरी मति छीनी पाप बीज बोयो ॥ जग० ३
अब हौं गंगा तीर पै जाकै श्री मथुरेश ध्यान-
उर लाकै सुमिरूं नाम हरी गुण गौ कै जैहै -
अघ धोयो ॥ जग० -४ ॥

{ यह गाता हुआ श्री गंगाजी के तीर — }
{ पर एक कुटी बनाके वहां भजन करता है }
{ एक दिन वेही चार पार्षद विमान लेकर }
{ आते हैं अजामिल को वैकुंठ ले जाते हैं ॥ }

{वैकुंठ में श्रीलक्ष्मी जी सहित नारायण-चतुर्भुज रूप से विराजे हुए हैं अजामिल विमान से उतरकर हरि चरणारविन्द में गिरकर पीछे हाथ जोड़कर यह स्तुति करता है}

पद ॥

धन्य धन दीनन हितकारी ॥
मन मन रंजन सब दुख भंजन जय भव भय हारी ॥ धन्य० ॥ मेटन हारो त्रविध ताप को धन्ये आप को नाम ॥ मो से अधम पतित को तारो दीन दया धारी ॥ धन्य० १
काहु भाव से लियो जाय तव नाम है अमित प्रभाव ॥ तारण तरण सुभाव नाम को अति मंगल कारी ॥ धन्य० - २ ॥
जय जग बन्दन दुःख निकन्दन अघ भंजन अभिराम ॥ सोभा धाम श्याम जन रंजन झांकी अति प्यारी॥ धन्य० ॥ ३ ॥
रहै सदा अनुराग चरण में प्रभू मूरत मन में ॥ श्री मथुरेश सुछवी दृगन सें कबहुं न होय न्यारी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥

इस के अनन्तर मुबारकबादी की गजल होकर लीला की समाप्ति-

गज़ल मुबारकबादी की ॥

मन मगन होके हरीजन ये वधाई लीजै ॥
पाया भगवान का दर्शन ये बधाई लीजे ॥१
क्या हरी नाम की महिमा है अजामिलसा अ
धम ॥ पागया मुक्ति रतन धन ये वधाई लीजै॥२
कैसा उत्तम है लगा हाथ ये मारग जिसमें ॥
सहज कट जायंगे वे बन ये बधाई लीजे ॥३
तुच्छ हैं सारे जतन दुःख के मिटने के लिये
नाम है कृपा का भंजन ये वधाई लीजे ॥ ४ ॥
धन्य मथुरेश कीयह पाप को नाश लीला ॥
इस पे बलिहार है तन मन ये बधाई लीजे॥ ५॥

॥ इति श्री अजामिल समुद्धार
लीला संपूर्णा ॥

विमान से उतरकर वैकुंठनाथ के सामने-
अजामिल का स्तुति करना